RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-02
Issue-11
November-2017

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com

उत्तराखण्ड में अनुसूचित जनजातियां: एक भौगोलिक अध्ययन

डॉ0 अंजली पुनेरा

एसोसिएट प्रोफेसर, भूगोल विभाग, राधेहरि राज0 स्नातकोत्तर महा0 काशीपुर, ऊधम सिंह नगर

ARTICLE DETAILS

Article History

Published Online: 30 November 2017

Keywords
अनुसूचित जनजाति , वनराजी, थारू, बोक्सा, भोटिया , जौनसारी !

ABSTRACT

हिमालय प्रदेश के अन्य राज्यों की ही तरह उत्तराखण्ड राज्य की सांस्कृतिक दुष्टि से विभिन्न संस्कृतियों का क्षेत्र रहा है। देश में कुल अनुसूचित जनजातियो की संख्या 104281034 है। 2011 की जनगणना के अनुसार उत्तराखण्ड राज्य में अनुसूचित जनजाति की कुल संख्या 291903 है जो राज्य की कुल जनसंख्या का 2.9 प्रतिशत है। उत्तराखण्ड की प्रमुख जनजातियां वनराजी , गोरखा, थारू, बोक्सा व जौनसारी है। उत्तराखण्ड अनुसूचित जाति के निवास स्थान या तो सूदुर पर्वतीय क्षेत्र में है या तराई भाबर की संकीर्ण पेटी मे है। आधुनिक सभ्यता यहां बहुत तेजी से पहुंच रही है जिसका प्रभाव इनकी सामाजिक परम्पराओं और संस्कृति पर पढ रहा है। जनजाति का औसत लिंगानुपात 936 है। सभी जनजातियों का सामाजिक तानाबाना व संस्कृति एक दूसरे से भिन्न है। इसलिये इनका जीवन का संघर्ष भी इनकी भौगोलिक परिस्थितियों की तरह एक दूसरे से भिन्न है। भोटिया जनजाति में शिक्षा का प्रसार सर्वाधिक है। जबकि वनराजी इसमें अभी पीछे छूट गये है। सरकार की कइ योजनाये इन्हीं लोगो को केन्द्र में रखकर बनायी गयी है।

प्रस्तावनाः

धवल हिमाच्छादित पर्वत श्रृखलाओं से हरी भरी वादियों और कल–कल निनादिनी गंगा यमुना की पावन भूमि का सीमान्त प्राप्त उत्तराखण्ड अपनी आध्यात्यमिक और धार्मिक विविधता के कारण पूरे विश्व में देवभूमि नाम से विख्यात है। उत्तराखण्ड ऐतिहासिक एंव सांस्कृतिक परम्पराओं से अभिभूत है जो महान हिमालय के उँचे शिखरों की गोद में पली अनेक महत्वपूर्ण नदियाँ– भागीरथी , अलकनन्दा, मन्दाकिनी, नन्दाकिनी, पिंडर, यमुना , काली , टौंस , धौली , रामगंगा आदि का उदगम क्षेत्र है। उत्तराखण्ड अनुपम प्राकृतिक सौन्दर्य वाला पर्वतीय राज्य है। 9 नवबम्बर 2000 को स्वतंत्र राज्य के रूप मे अस्तित्व में आए इस प्रदेश की प्राचीन संस्कृति उतनी ही विविधता पूर्ण है जितनी भारतीय संस्कृति है। यह प्रदेश महान हिमालय, लघु हिमालय तथा उप हिमालय अर्थात शिवालिक पर्वत श्रेणियों से निर्मित है। यह पार्वत्य प्रदेश भारत के उत्तर में स्थित 28^0 42′ से 81^0 42′ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। इसकी लम्बाई पूर्व से पश्चिम 58 किलोमीटर तथा उत्तर से दक्षिण 320 किलोमीटर है।

यह एक सीमान्त राज्य है। जिसकी भौगोलिक सीमाऐं बहुआयामी है। इसके उत्तर में चीन (तिब्बत) दक्षिण मे उत्तर प्रदेश, पूर्व में नेपाल, पश्चिम में हिमाचल प्रदेश है। टोंस नदी इस राज्य को हिमाचल–प्रदेश से तथा काली नदी नेपाल से पृथक करती है। इस राज्य का कुल भू भाग 53483 वर्ग किमी है। जिसमें 92.57 प्रतिशत भाग पर्वतीय तथा 7.43 प्रतिशत भाग मैदानी (तराई और भाबर सहित) है। इसका 34434 वर्ग किमी (63 प्रतिशत) वन क्षेत्र है तथा 11.50 प्रतिशत कृषि योग्य क्षेत्र है। जबकि परती भूमि मात्र 2.25 प्रतिशत है। सिंचाई योग्य भूमि का प्रतिशत 12.50 है। 4 प्रतिशत भाग पर वृक्ष एवं झाड़िया है। अधिक ऊँचाई वाले भागों में घास के मैदानो जिन्हें बुग्याल कहा जाता है, का विस्तार है। पशुचारण तथा औषधि की दृष्टि से इनका विशेष महत्व है परन्तु वर्तमान समय में अनियमित उपभोग से कई पौध प्रजातियां विलुप्त हो रही है।

उत्तराखण्ड की जनजातियां

उत्तराखण्ड जनजातियो की दृष्टि से सामान्य राज्य है। उधमसिंहनगर में सबसे अधिक अनूसूचित जनजाति की जनसंख्या है। राजी, भोटिया , बोक्सा, थारू , जौनसारी आदि यहां की प्रमुख जनजातियां है, यहां कुछ जनजातियां तो पर्वतीय क्षेत्रो में जटिल भौगोलिक वातावरण में रहती हैं।

वनराजी जनजाति

यह प्रमुखतः धारचूला , डीडीहाट , एवं चम्पावत में निवास करते है। वर्तमान समय में इनकी जनसंख्या 500 है। यह एक अनोखा समाज है। जो घने जंगलो एवं ऊँची पहाड़ियों पर निवास करता हैं। सघन जंगली क्षेत्रो मे रहने वाली तथा उन्हीं पर जीवन निर्वहन करने वाली इस जनजाति को वनरावत भी कहा जाता है। संसाधन रहित विषम परिस्थितियेां में जगंल मे रहने के कारण इनका विकास नहीं हो पाया। राजी जनजाति

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

वनवस्तु संग्राहक है। ये लेाग वन उत्पादित फल एंव कन्दमूल को भोजन के रूप में लेते है। इसके अलावा जंगली जानवरों का शिकार भी करते है। इनके जीवन निर्वहन का मुख्य साधन लकडी की चिराई , मजदूरी व पशुचारण है। सरकारी अनुदान के कारण इनमें कार्य के प्रति उदासीनता आ गयी है, यह बहुत सीमित क्षेत्र मे निवास करते है। केवल यह गांवो तक ही में सीमित है। जो डीडीहाट, , धारचूला कनालिछीना तथा चम्पावत में है। ये अपने को हिन्दु राजपूत मानते है। आर्थिक स्थिति दयनीय है क्योंकि शिक्षा का प्रसार भी नहीं है। जिस कारण कुपोषित व रोगों से ग्रस्त है। निरन्तर जनसंख्या कम होती जा रही है। तथा इनका अस्तित्व संकट में है।

तालिका 1 उत्तराखण्ड में जनजातियों का वितरण

थ्जले	अनुसूचति जनजाति जनसंख्या	जनसंख्या प्रतिशत	साक्षरता प्रतिशत	पुरूष प्रतिशत	महिला प्रतिशत
उत्तर काशी	3512	1.06	76.8	91.2	64.2
चमोली	12260	3.13	85.7	95.3	76.8
रूद्रप्रयाग	386	1.60	86.3	89.4	82.1
टिहरी गढवाल	875	0.14	78.4	84.0	72.2
छेहरादून	111663	6.58	73.7	84.4	63.0
पौड़ी गढ़वाल	2215	0.32	79.3	88.7	68.4
पिथोरागढ़	19535	4.04	84.4	93.5	75.8
बागेश्वर	1982	0.76	82.8	93.1	73.2
अल्मोड़ा	1281	0.20	82.6	97.7	87.2
चम्पावत	1339	0.51	77.3	56.1	97.2
नैनीताल	7495	0.78	76.2	84.0	68.2
उधमसिंहनगर	123037	7.46	62.1	71.4	51.4
हरिद्वार	6323	0.33	0.6	79.7	60.7

स्रोत : जनगणना, 2011

भोटिया जनजाति

उत्तराखण्ड की दुर्गम पर्वतीय कन्दराओं में निवास करने वाली आदिम प्रजातियों में एक महत्वपूर्ण प्रजाति भोटिया या शौका प्रजाति भी है। भोटिया या शौका मंगोल प्रजाति के समान होते है। ये पिथोरागढ़ जिल के मुनस्यारी व धारचूला तहसीलों मे निवास करते है प्राचीन काल से ही यह प्रजाति तिब्बत से व्यापार करती आ रही है। भोटिया समाज कृषि पशुपालन व्यापार उघोग एवं श्रम पर आधारित है। इनका ऊनी वस्त्र उधोग इनकी हस्तकला का उत्कृष्ठ नमूना है। चुटका कालीन , पंखी थुलमा आदि वस्त्रों का निर्माण करते है। अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार व्यापार है। तिब्बत से व्यापार 1962 में चीन भारत युद्व के बाद बंद हो गया। यह समाज उत्तराखण्ड को अन्य जनजातियों की अपेक्षा अधिक जागरूक है। षैतिक विकास एवं प्रसार की दृष्टि से भी यह जागरूक है। भोटिया या शौका प्रजाति को सामन्यता छः वर्गो मे विभक्त किया गया है। शौका , जौहारी , दारमिया , तौलछा , मारछा तथा जाड़। दारमिया पिथोरागढ़ जिले के दारमा में व्यास और चौंदास मे ंनिवास करने वाले शौका गोरी नदी घाटी मे निवास करने वाले जोहार (मुनस्यारी) के अन्तर्गत आते है जौहारी कहलाते हें चमौली जिले में आदिम प्रजाति मारछा तथा तोलछा तथा उत्तरकाशी की भागीरथी घाटी में निवास करने वाले जाड़ है। इनकी भाषा, खानपान, व रहनसहन पर तिब्बती प्रभाव देखा जा सकता है। 1962 के बाद पशुपालन मुख्य व्यवसाय हो गया।

बाक्सा जनजाति

उधमसिंहनगर जिले के बाजपुर, देहरादून के विकासपुर मे इनका निवास है। विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों मे रहने के कारण इनकी सांस्कृतिक गतिविधियों में भी विभिन्नता है। इनके शारीरिक लक्षण मंगोल प्रजाति के है। तराई बनवसा जो कि संघन जंगलो से आच्छादित है इनका मूल निवास है। ये हिन्द ुधर्म के अनुयामी होते है। तथा वन उत्पादनों पर जीवन निर्वाह करते है। धीरे – धीरे जंगलो के विनाश के कारण ये लोग कृषि कार्य तथा श्रमिक के रूप में कार्य करने लगे। तथा वर्तमान समय मे यही इनकी आजीविका का प्रमुख साधन है। चावल गेहूं गन्ना आलू आदि की कृषि मे करते है।

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

गन्ना की कृषि, व्यापरिक कृषि के रूप में होती हे बाजपुर एंव काशीपुर की चीनी मिल में उत्पादित गन्ना बेचकर इन्हें नकद भी प्राप्त हो जाता है। भू अतिक्रमण पेयजल , ऋण ग्रस्तता यातायात स्वास्थ्य शिक्षा आदि की समस्याएँ इन जनजाति के सामने है सरकार ने इनकी सहायता के लिए अनेक योजनाए चलायी है । परन्तु उसका लाभ इन्हें मिल नही पा रहा है।

तालिका 02 उत्तराखण्ड में जनजातियों का वितरण

जनजाति	जनसंख्या	योग प्रतिशत में	ग्रमीण प्रतिशत में	नगरीय प्रतिशत में
भोटिया	39106	13.4	72.2	27.8
बोक्सा	54037	18.5	97.9	2.1
जौनसारी	88664	30.4	93.2	6.8
श्राजि	690	0.2	87.8	12.2
थारू	91342	31.3	95.2	4.8
अन्य जनजातियां	18064	6.2	74.6	25.4
कुल जनजातियां	291903	100.0	90.7	9.3

स्रोत : जनगणना, 2011

थारू

मध्य हिमालय मे भाबर , तराई , हरिद्वार और दून घाटी ही चौरस है पहले सारा भाबर वनों से ढका था जिसमें भीषण एंव भयंकर पशुओं की भरमार थी। थारू और बोक्सा लेाग भाबर और तराई में बसे है। थारू जनजाति नदी के किनारे रहना पसन्द करती है। शिकार खेलना और मछली मारना उनका शौक हैं नानकमत्ता बिचपूरी व खटीमा में थारू कृषि करते है। ये दलदली भूमि मे धान के उत्पादक है। थारू तराई के पूरब मे षारदा से लेकर पश्चिम में काशीपुर तक बसे हुए है। इनकी बस्तियां तराई मे बहुत पुरानी है। यह उत्तराखण्ड की सभी जनजातियों मे सबसे अधिक जनसंख्या वाली जनजाति है। इनकी कृषि भूमि उर्वर है परन्तु परम्परागत कृषि यंत्र एवं बीज से कृषि की जाती है । जिससे उत्पादन कम होता है। केवल जीवन निर्वाह के लिए ये कृषि एवं आखेट करते है।

जौनसारी

यह जनजाति देहरादून जनपद की चकराता तहसील मे बसती है। सामाजिक – आर्थिक एंव धामिक सरंचना के कारण इसको विशिष्ट सांस्कृतिक महत्व प्राप्त है। जौनसारी समाज में सामजिक स्तर की जटिलता विद्यमान है संयुक्त परिवार का प्रचलन हैं जौनसारी अपने को पांडव वंशीय मानते है। द्रोपदी की तरह बहुपति विवाह की परम्परा की प्रथा के कारण ये लोग अधिक चर्चित है। जौनसारी समाज की अर्थव्यवस्था मूलतः कृषि तथा पशुपालन पर निर्भर है। कृषि कार्य, जुताई , बुआई , आदि परम्परागत ढंग से होती है। जिसमें स्त्री पुरूष मिलकर कार्य करते है। कृषि कार्यो मे पशु श्रम का भी उपयोग किया जाता है। तथा इसका व्यावसायिक रूप नही दिखायो देता जीवन निर्वाह के लिए किया जाता है। इनकी जमीन खेतों मे विभाजित हैं एक खेत में कई गांव होते है। जिनके मुखिया अलग अलग होते है। स्त्रियों की दशा विचारणीय है। तथा संयुक्त परिवार धीरे – धीरे विघटित हो रहे है। जौनसार भाबर देहरादून जनपद का पर्वतोय भाग है। इस भाग मे घाटियों और चौटियों का जाल बिछा हुआ है। देवदार की बहुमूल्य लकड़ी के अलावा यहां पर बुरांज, खरसू ,स्प्रूस तथा फर के वृक्ष भी उपलब्ध है। कृषि योग्य भूमि कम है तथा जोते होती है। जनसंख्या का घनत्व कम है। गांव एक दूसरे से दूर बसे है। महासू देवता की पूजा होती है।

निष्कर्ष

2011 की जनगणना के अनुसार उत्तराखण्ड राज्य में अनुसूचित जनजाति की कुल संख्या 291903 है जो राज्य की कुल जनसंख्या का 2.9 प्रतिशत है। कुल अनुसूचित जनसंख्या में से 90.7 प्रतिशत (264819) ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करते हे तथा शेष 9.3 प्रतिशत (27084) नगरीय क्षेत्र मे रहते हैं। 2001 से 2011 के बीच ग्रामीण क्षेत्रों की अनुसूचित जनजाति में 10.2 प्रतिशत की वृद्वि हुई हे जबकि नगरीय क्षेत्र मे यह वृद्वि 70.3 प्रतिशत रही है। उत्तराखण्ड अनुसूचित जाति के निवास स्थान या तो सूदुर पर्वतीय सीमान्त क्षेत्र में है। या तराई भाबर की संकीर्ण पेटी मे है। जनजाति का औसत लिंगानुपात 936 है। राज्य में सबसे अधिक जनजाति उधमसिंहनगर में (7.64 प्रतिशत) है। जबकि सबसे कम टिहरी में (0.14 प्रतिशत) है। राज्य में जनजाति की औसत साक्षरता 73.4 प्रतिशत है। पुरूषों में 83.8 प्रतिशत व महिलाओं में 69.5 प्रतिशत साक्षरता है।

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. एटकिंसन , ई.टी., ''दी हिमालयन गजेटियर्स वोल्यूम। पार्ट ।। '' कोटयेा पब्लिकेशन , दिल्ली रिप्रिंटेड 1973
2. ओफले , इ.एस.एण्ड गैरोला, तारादत्त, ––हिमालय की लोक कथाऐं '' किताब महल , प्राइवेट लिमिटेड, रामनगर , नई दिल्ली।
3. धनश्याम जोशी, उत्तराखण्ड का राजनीतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, 2003 , आर.बी.प्रिन्टर्स मेरठ।
4. डॉ. हरिमोहन , ''उत्तराखण्ड में पर्यटन नएं क्षितिज,'' तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली, 2003
5. डॉ. एस.सी. खर्कवाल, उत्तराखण्डः भौतिक , सांस्कृतिक एवं कार्मिक परिदृश्य का भोगोलिक विश्लेशण, 2014 , विनसर पब्लिशिंग हाउस, देहरादून उत्तराखण्ड
6. डबराल, एस.सी (डॉ) ''उत्तराखण्ड के भौगोलिंक'', वीरगाथा प्रकाशन दुगडडा , गढ़वाल, 2021
7. ध्यानी , आर.पी.डॉ., ''उत्तराचंल की खोज ,'' विद्या प्रकाशन , मेरठ
8. पाण्डे , बद्रीदत्त, ''कुमायूँ का इतिहास'' प्रेम कुटीर, अल्मोड़ा
9. मैथानी, डी.डी. प्रसाद, गायत्री, नोटियाल, राजेश,'' उत्तराखण्ड का भूगोल,'' शारदा पुस्तक, इलाहाबाद, 2010
10. सिंह , ओ.पी. ''द हिमालय, नैचर , मैन एण्ड कल्चर'' (विद सोशल स्टडीज इन यू.पी. हिमालय) राजेश पब्लिकेशन नई दिल्ली।
11. श्रावत , उमराव सिंह , ''उत्तराखण्ड की झांकी,'' वीरगाथा प्रकाशन दुगड्डा गढ़वाल, 1956 !

© RRIJM 2015, All Rights Reserved